International Journal of Applied Research 2016; 2(9): 686-689

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 686-689
www.allresearchjournal.com
Received: 04-07-2016
Accepted: 05-08-2016

डॉ. अर्चना पटेल
सहा. प्राध्यापक इतिहास
विध्यांचल महाविद्यालय, रीवा,
मध्य प्रदेश, भारत।

Correspondence
डॉ. अर्चना पटेल
सहा. प्राध्यापक इतिहास
विध्यांचल महाविद्यालय, रीवा, मध्य
प्रदेश, भारत।

बघेलखण्ड के प्रमुख एवं प्रथम इतिहासकार मौलवी रहमान अली का बघेल राजघराने से सम्बन्ध

डॉ. अर्चना पटेल

सारांश
उर्दू भाषा और साहित्य का अपना महत्वपूर्ण स्थान है इसके बोलने वाले एशिया, यूरोप और अन्य विश्व के सभ्य देशों में पाये जाते हैं। किन्तु ये निर्विवाद सत्य है कि उर्दू भाषा का जन्म भारत वर्ष में हुआ। भले ही भाषा विज्ञानिक इसकी उत्पत्ति पंजाब, हरियाणा, से दक्षिणी भारत, अवध दिल्ली, लखनऊ का नाम बताते है, किन्तु ये भाषा यही की हैं। हमारे भारतीय संविधान में इतनी भाषाओं में एक ये भी भाषा है। मुगल काल में सरकारी भाषा फारसी थी किन्तु अंग्रेजो के काल में उर्दू हो गयी और अंग्रेजो ने अपनी भाषा अंग्रेजी का प्रचलन और प्रचार करने में कसर नहीं उठा रखी। हमारे क्षेत्र बघेलखण्ड में भी इन दोनों भाषाओं का प्रभाव रहा है, इसी कारण हमारे यहाँ उर्दू भाषा में लिखने वाले इतिहासकार हुये जिनमें उपलब्ध पुस्तकों और उनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण लेखक मौलबी रहमान अली का परिचय तथा उनके सम्बन्धित कार्यों का वर्णन भी दिया जा रहा है। उनके बघेल राजाओं से सम्बन्धों का वर्णन भी उनकी पुस्तक तवारीख, ए–बघेलखण्ड के द्वारा अनुवादित कर प्रस्तुत किया गया है।

मूलशब्द: बघेलखण्ड, मौलवी रहमान अली, बघेल राजघराना

प्रस्तावना
सरगुजस्त मोअल्लिफ (लेखक) किताब के शीर्षक से मौलवी रहमान अली ने अपने इतिहास तवारीखे बघेलखण्ड में लिखा हैं– "मोअल्लिफ का नाम अब्दुश शकूर उर्फ रहमान अली है जो कि असली नाम रीवा वालों की जबान पर शकील था। कुसूमन (विशेषतः) हमारे महाराज साहब रघुराज सिंह की उर्फ मशहूर हो गया। अलगरज मोअल्लिफ तारीख दूसरी जिलहिज्जा रोज जुमा सन् 1244 हिजरी को अहमदाबाद नारा जिला इलाहाबाद में पैदा हुआ जब उसकी उम्र 11 साल 9 महीने 12 रोज की हुयी, उसके बालिद (पिता) माजिद हकीम शेर अली मरहूम ने उम्र 75 साल तारीख 14 वीं रमजान सन् 1256 हिंजरी में इंतकाल फरमाया। उस वक्त मोअल्लिफ निसाब कोर्स अबु फरादी को पढ़ता था।"

मो. रहमान अली की शिक्षा–दिक्षा के सम्बन्ध में ये जानकारी लाभप्रद होगी कि उन्होंने फारसी और अरबी भाषायें कहाँ–कहाँ पढ़ी और कौन उस काल के महान उल्मा से उन्होंने क्या शिक्षा ग्रहण की–"रस्म तस्मिया खानी के बाद कुरान शरीफ नाजरा पढ़ कर फारसी में निसाब अबु फराही जेरे (अध्ययन के अधीन) मुतालआ (अध्ययन) थी। के साये आत फते पिदरी (पिता के स्नेह की छाया सर से उठ गया था) हकीम एहसान अली साहब ने जो आपके बड़े भाई थे आपकी तालीम और तरवियत अपने जिम्मा ले ली और अपने साथ अपने जाये कयाम फतहपुर हसवा ले गये वहाँ फारसी से फारगुत तहसील होकर (शिक्षा समाप्त) अरबी की तहसील का आगाज हुआ (प्रारम्भ) और अरबी की तहसील में आपने उस तादाने जैल (निम्नलिखित गुरूओं) की खिदमत में जानुए सार्गिदी तह किया–

1. मौलाना मोहम्मद अब्दुश शकूर साहब (मछली शहरी सद्रूश सुदूर जिला फतहपुर)[i]

"रहमान अली ने अपनी पुस्तक तजकिराये उल्माये हिन्द में इनके सम्बन्ध में मौलाना मोहम्मद शकूर मछली शहरी के शीर्षक के अन्तर्गत लिखा है, फतहपुर हसवा में सद्रूश सदूर थे तो मोअल्लिफ हेच मदा (अनभिज्ञ लेखक मौलवी रहमान अली) जनाब के सागिर्दी में शामिल हो गया। 1844 ई. में मौलाना ममदूह पेंसन लेकर अपने वतन चले गये। फकीर (रहमान अली) भी मछली शहर गया और जनाब से दरमियानी किताब पढ़ती दर्सी किताबे बगैर देखे। चहल कदमी की हालत में पढ़ाते थे।[ii]

2. मौलाना साबित अली भका

इनमें सम्बन्ध में रहमान अली ने लिखा है, मौलाना साबित अली साकिन बहका वफात 1865 ई. जिस जमाना में वे मौलवी मोहम्मद उमर विरादर ज्यादा (भाई का बेटा) मौलवी मोहम्मद जहूर मछली

शहरी की तालीम के लिए गाजीपुर में मुलाजिम थे। मोअल्लिफ किताब ने शरहजामी उनकी खिदमत में पढ़ी।[iii]

3. मौलाना सय्यद हुसैन अली फतह पुरी
4. मौलाना अब्दुला जैदपुरी
5. मौलाना शाह सलामुतुल्ला साहब बदांयूनी (सोमुल कानपुरी)– इनके सम्बन्ध में रहमान अली ने लिखा है कि मोअल्लिफ औराक (पृष्ठों के लेखक) ने थोड़ा सा फैज (लाभ) इनसे हासिल किया है।[iv]
6. मौलाना कारी अब्दुर रहमान साहब पानी पती।

परीक्षा–रहमान अली ने अरबी फारसी के अन्तिम कोर्स और पाठ्यक्रम को समाप्त करने के पश्चात् सदरूश सदूर की परीक्षा की तैयारी करके परीक्षा दिया और सफल हुए।

मौलवी रहमान अली द्वारा किये गये सेवा कार्य–"रहमान अली ने इम्तहान सदरूशसदूरी पास करने पर जब इनके मुकाबले में एक गैर शख्स, गैर कॉम को तरजीह गैर मर्जी दी गयी। इस कारण के हृदय उचाट (दुःखी) हो गया और समस्त हालात से अपने बड़े भाई मौलवी अमान अली खाँ को सूचित किया और उन्होंने इनको रीवा तलब किया। भाई के द्वारा इन्हें रीवा दरबार में नौकरी मिली।" जैसा कि तवारीखे बघेलखण्ड में सरगुजस्त शीर्षक से अपने सम्बन्ध में वर्णन किया है, वहीं उन्होंने अपनी पुस्तक में अपने पहले पहल रीवा आने का वर्णन इस तरह विस्तार से किया है– "फागुन वदी 12 सम्वत् 1907 यौन पंज सम्बा को बाबू रघुराज सिंह साहब ने अपनी शादी के लिए उदयपुर जाने वास्ते महल से कूँच करके बगात निपनिया में डेरा किया। उसी रोज मोअल्लिफ अबरूक (पृष्ठों का लेखक) हजबुत तलब (बुलाने पर) महाराजा विश्वनाथ सिंह रीवा पहुँचे शाम को महाराजा साहब मौसूफ की मुलाजमत (नौकरी) हासिल की इरसाद हुआ कि तुम्हारे भाई मौलवी अमान अली खाँ भागवत दास के हमराह उदयपुर जाते है। तुम भी जाओं, वहाँ से रूकसत होकर बाबू साहब की खिदमत में हाजिर हुआ तो उन्होंने भी बाद मिजाज फुर्सी (स्वभाव पूछना) फरमाया कि तुम हमारे साथ चलो और खास कलम गजाधर प्रसाद को हुक्म दिया कि मौलवी जी के भाई हमारे साथ जायेगे। उनकी तौलिहा (खुराक) और सवारी का बन्दोवस्त कर दी। चुनान्चे बेनी गज हाथी मेरी सवारी के वास्ते तैनात हुआ और पांच आदमियों का तौलिहा रोजना मिलने लगा।" इस प्रकार रहमान अली रीवा का पहला आगमन हुआ और उसी दिन उनकों सरकारी नौकरी में स्थान भी प्राप्त हो गया सबसे पहला काम उनको ये दिया गया कि ये राजकुमार की शादी में उनके साथ जाए।

इस तिथि से लेकर मृत्यु पर्यन्त (1907) तक ये रीवा राजाओं के सेवा में कार्यरत रहें। रहमान अली को सरकारी कार्यों में हम पूरी उम्र व्यस्त पाते हैं। इतिहासकार सरकारी नौकरी में सरकार का आज्ञाकारी सेवक के रूप में रहा ही साथ ही साथ उसने अपने आप को अपने मालिक राजाओं को तथा इन राजाओं की छत्र–छाया में रहने वाली जनता की दशा को अपने इतिहास में स्थान देकर अमर कर लिया। कल्पना ही नहीं यर्थात् रूप में हम जब उसके इतिहास को पढ़ते हैं, तो ये तथ्य सामने आता है कि रहमान अली को राजघराने ने अपना सेवक ही नहीं बनाया था, वरन् रहमान अली को अपने परिवार का एक सम्मानित सदस्य भी मानते थे, जैसा कि रहमान अली ने अपनी पुस्तक में बताया है कि – "जिस समय राजा रघुराज सिंह की मृत्यु हो गयी तो रीवा रानियों ने उनसे क्या काम लिया और उन्हें किस दृष्टि से देखा और राज घराने से निकटतम पारिवारिक सम्बन्ध होने के साथ–साथ रहमान अली का अंग्रेज उच्च अधिकारियों और राजगुरू से भी कितना निकटतम सम्बन्ध था। वे भी महाराज रघुराज सिंह की बीमारी और मृत्यु की घटना से स्पष्ट होता है। जिक्र वफात महाराज रघुराज शीर्षक के अन्तर्गत इस शब्दों में इतिहासकार ने घटनाओं का वर्णन प्रत्यक्ष दर्शी के रूप में किया है–

"चन्द माह से महाराजा साहब मौसूफ बाआरजा बुखार (ज्वर रोग) से और दर्द जिस्मानी (अंग मर्दन) अलील (पीड़ित) थे, किसी कदर इफाका रोग की कमी के साथ स्वास्थ्य की वृद्धि होने लगा था। बातारीख 30 अक्टूबर 1879 ई. मुताबित कातिक सुदी यकुम सम्वत् 1936 रोज 1 बजे रात को दफातन (अचानक) बेहोस हो गये हाथ पाँव खिंचने लगे मूँह से कफ जारी हुआ, पास वाले आदमी घबराये वेदों को बुला लाये रानी ने ववेलो (रोना) शुरू किया 31 वें अक्टूबर रोज जुमा तमाम दिन यही हालत रही, कर्नल वर्कली साहब बहादुर मुन्तजिम आला सतना में थे, मोअल्लिफ अवराक ने वजरिये मुल्तमा साहब मौसूफ को इस बीमारी की इत्तेला (सूचना) दी। यकुम नवम्बर रोज सम्बा 1879 ई. को थोड़ा एफाका (फायदा) जाहिर हुआ 4 नवम्बर को कर्नल बर्कली सा. बहादुर मुन्तजिम आला (प्रधान व्यवस्थापक) डॉ. गोल्ड स्मिथ साहब बहादुर सर्जन ऐजेन्सी और पं. हेतराम साहब इन्चार्ज दीवान सतना से रीवा तस्रीफ लाये जब साहबान मौसूफ बीमार पोसी के लिए महाराजा साहब के पास गये। महाराजा साहब ने महाराज कुमार व्यंकट रमण, रामानुज प्रसाद सिंह अपने फर्जन अर्नुमन्द (सुपुत्र) और बाबूराम राज सिंह को बर्कले सा. बहादुर के रूबरू (समक्ष) पेश करके फरमाया के इन दोनों को आप की सुपुर्दगी में देता हूँ। साहब मौसूफ ने तस्फीह और तसल्ली दी, चन्द रोज में महाराजा साहब की तबियत दुरूस्त हो गयी। 19 दिसम्बर 1879 रोज जुमा 4 बजे से सह पहर वही कैफियत महाराजा साहब की हो गयी जो 30 अक्टूबर को हुयी थी। बाद एक रोज के इफाका हुआ, तब बइरादा तब्दील जगह के लक्ष्मन बाग में जाकर मुकीम (निवास या ठहरे) हुये। वहाँ 1880 रोज सम्बा उसी किस्म की बेहोशी तारी हुयी, यकुम फरवरी 1880 को महाराजा साहब, ईश्वरी प्रसाद, नारायण सिंह, महाराजा बनारस वास्ते बीमार पुर्सी के वास्ते रीवा तसरीफ लाये। महाराजा साहब रघुराज सिंह उसी तौर से बेहोश रहे, उसी हालत में तीन फरवरी को महाराजा बनारस को नहजत फरमा रवाना हुए। उसी तारीख 12 बजे रात को कन्छारी राम मुर्सिला (प्रेषक) स्वामी ख्याली दास जी लक्ष्मणबाग से मेरे पास आये और स्वामी जी का पैगाम मुझसे कहा कि महाराजा साहब की बीमारी बढ़ती जाती है। रानियों ने अब तक कुछ नहीं खाया। रानियों की नियत दिगर गूँ (दूसरी तरह) मालूम होता है, जो तजवीर मुनासिफ हो की जावे। 4 थी फरवरी रोज चहार सम्बा 1880 ई. मुताबित माघ वदी 9 सम्वत् 1936 को अलस्सबाह (प्रातःकाल) खिदमत में कर्नल बर्कली सा. बहादुर को जो बंगला रीवा में तसरीफ रखते थे हाजिर होकर मैने कैफियते सद्र (उपयुक्त दशा) गुजारिश की साहब मौसूफ ने मुझसे फरमाया कि तुम हमारी तरफ से रानी साहबों को फहमाइस और तस्सली दो और उस खजान्ची को ले आओ, जिसके पास जेवरात की कुन्जी है। मैं लक्ष्मण बाग गया, महाराजा साहब की हालत नाकिस देखी, महारानी साहिबा ने बर्कली साहब का पैगाम पर्दा के बाहर से कहा। अन्दर से बा जवाब मेरे गुफ्तार (बात) से ये आवाज आयी कि हम लोग बगैर सेहत याबी (बिना स्वस्थ्य हुये) महा. साहब के कुछ नहीं खावेंगे। हमारी जिन्दगी उन्हीं के साथ है। अलगरज मैं कामता भण्डारी को जिसके पास जेवर की कुंजी थी, लेकर बंगला ऐजण्टी को आकर कुल हाल साहब बहादुर से अर्ज किया। कामता भण्डारी से साहब ने फरमाया कि जब तक महाराजा साहब की तबियत अच्छी न हो बंदू हमारी हुक्म के जेवर खाना किसी के कहने से न खोलना, कामता भण्डारी बंगला से लक्ष्मण बाग को गया और मैं अपने मकान को आया। 1 बजे उसी रोज साहब मौसूफ का एक चपरासी मेरे पास आया और कहा कि महाराजा साहब वासिउदत बीमार (बहुत अधिक) हैं। साहब लक्ष्मण बाग जाते हैं और आपकों तलब किया है। मैं फौरन लक्ष्मण बाग को रवाना हुआ मेरे पहुंचने से कब्ल (पूर्व) बर्कली साहब बहादुर और डॉ.

गोल्ड स्मिथ सा. बहादुर वहाँ पहुँच गये थे। जब मैं पहुँचा दोनों साहबान साबकुज जिक्र (पूर्ण वर्णित) मैं चन्द सरदारों के वास्ते देखने महाराजा साहब के अन्दर गये पर्दा के बाहर से बर्कली सा. ने बजाते खास महारानी साहिबों को तस्सली दी, वहाँ से यही जवाब मिला कि हमारी जिन्दगी महाराजा साहब के साथ है। बाहर आकर सब लोग थोड़ा बैठे कि 5 बजे उसी रोज शाम को महा. साहब ने इन्तकाल फरमाया, जनाजा उठने की तैयारी होने लगी तब महारानियों की तरफ से सती होने का इरादा जाहिर हुआ, बर्कली सा. बहादुर ने फर्माया की ये बात किसी तौर से मुमकिन नहीं है इसी रज्जोबदल में 9 बजे गये। लाल शिव बक्स सिंह, लाल भरत सिंह, लाल कल्याण सिंह, लाल रामानुज प्रसाद सिंह, सरदार नरहरि सिंह, दलप्रताप सिंह, सकत्तर बाके सिंह वगैरा सरदारों ने बर्कली साहब बहादुर के हुजूर में अर्ज किया कि वमूजिव सूली मजैवी (धार्मिक सिद्धान्त के अनुसार रात के वक्त दग्द (दाह संस्कार) नहीं हो सकता इस वक्त हुजूर बंगला में जाकर आराम फरमावे कल सुबह दग्द आपके रूबरू होगा साहब मौसूफ ने फरमाया रात भर का क्या इत्मिनान है। आठो सरदारों ने कहा हम लोग इसके जिम्मेदार हैं। हुजूर के गीवत् में (अनुपस्थित) रात को दग्द न होगा साहब बहादुर ने आठों सरदारों का नाम लिख लिया, मुन्शी कालिका प्रसाद तहसीलदार हुजूर तहसील और कप्तान हुजूरा सिंह हो साहब बहादुर ने मौका पर छोड़ा और खुद मैं डाक्टर साहब के बंगला को तस्रीफ लाये मुझकों ईसाद फरमाया की तुम भी मकान को जाओं, सुबह हाजिर होना। 5 वीं फरवरी 1880 रोज पंज सम्बा अलसब्बाह दोनों साहबान मौसूफ और राकमुल किताब (पुस्तक का लेखक) लक्ष्मण बाग को पहुँचे जब जनाजा उठाने की तैयारी हुयी वहीं बात पेश आयी, साहब बहादुर ने मुझसे फरमाया कि तुम जाकर फहमाइस (सक्षम) करों मैं अन्दर जाने लगा, दरवाजा पर रघुनाथ दास वैष्णव से मुलाकात हुयी, उसने मुझसे कहा कि अगर महारानियों को कोई तहरीर (लेख) इस मजमून (विषय) का मिले कि किसी रानी के एजास (सम्मान) और जागीर में किसी किस्म का तकाबुल (अन्तर) न होगा तो सायद रानिया अपने इरादे से बाज आवें, मैं उसको साहब बहादुर के पास ले गया। उसने साहब से वैसा ही अर्ज किया जैसा मुझसे कहा था, साहब बहादुर ने मेरी तरफ देखा मैनें अर्ज किया कोई कबाहत इस तहरीर में नहीं है। अलगरज्ज साहब मौसूफ ने तहरीर की इजाजत दी, कुन्ज बिहारी राम वैष्णव ने हिन्दी में कागज वामजमून सद्र (उपयुक्त विषय का) तहरीर किया। बर्कली साहब बहादुर ने उस पर दस्खत बनाये।

रघुनाथ दास कागज मस्कूर अन्दर ले गया और जनाजा अन्दर से बाहर आया। लाल रामानुज प्रसाद सिंह (व्यकंट रमण) ने दग्द दिया। लास जलने के बाद जब सरदारों ने गुस्ल (स्नान) किया दोनों साहब बंगला को तसरीफ लाये और मुझसे फरमाया कि जब तक रानियाँ रीवा के महल को जावें तुम यहाँ रहना, तमाम दिन मैने लक्ष्मण बाग में बसर किया। 9 बजे रात को लाल शिव बख्स सिंह सब रानियों को फहमाइस करके महल को ले गये। जब महारानियाँ महल के अन्दर दाखिल हो गयी मैनें बंगला पर जाकर साहब बहादुर के हुजूर में उसकी रिपोर्ट कर दी।

राय मोअल्लिफ (लेखक का मत) है कि "महारानी साहबान और सब आदमी यकीनन (निश्चित रूप) जानते थे कि बहालत मौजूदगी साहब पोलिटिकल ऐजेन्ट बहादुर किसी सूरत से सती ने होने पायेंगी लेकिन, उसके साथ ये गुमान था कि बाद महाराजा साहब के हमारी जागीरे जब्त होकर नगद रूपये मिलेगा इसी हिफजमातक्दम (पूर्व सुरक्षा की दृष्टि से) के नियत से ऐसा ईरादा जाहिर किया गया है।

इतिहास लेखन में तथ्य का महत्व कितना अधिक होता है, इसे कहने की आवश्यकता नहीं है। मौलवी रहमान अली ने जब अपना इतिहास लेखन का कार्य प्रारम्भ किया तो उनके सामने कैसी विकट समस्या खड़ी हुयी उन्हीं के शब्दों में लिखा है–

"लेखक किताब का रहमान अली खाँ बवसीली (माध्यम से) अपने बड़े भाई मौलवी हकीम अमान अली खाँ मरहूम सम्वत् 1907 ई. (1850) वायदे हुकूमत (शासन काल में) महाराजा विश्वनाथ सिंह साहब बैकुण्ठ वासी ने रीवा आया। बावजूद, कारहाय, मक्तालिफा (विभिन्न कार्यों से सम्बंधित होने) के हमेशा तवारीख इस मुल्क का जोया रहा (ढूढ़ता रहा)। मगर कोई ऐसी किताब दस्तयाब (प्राप्त) नहीं हुयी, जिससे हालात तारीख बघेलखण्ड के मालुम होते और दर हकीकत किसी ने अब तक इस मुल्क की तारीख नहीं लिखी मेरी खाइसे दिल्ली उसकी तालीफ (लेखन) की थी। चन्द पुस्तनाम बघेलो के फराहम (एकत्रित) किये और पुराने आदमियों से जो जबानी सुना उसको कलम बन्द करता गया।

मौलवी साहब के बयान से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनको टेबिल पर रखी हुयी पुस्तके नहीं मिल सकी थी कि वे उन्हें बैठकर पढ़ते और लिखते इसके लिए उनको लोगों से सम्पर्क करना पड़ा और विश्वस्त सूत्र से उन्हें जिन लोगों के द्वारा जानकारी प्राप्त हुयी उनसे सम्पर्क करके ही उन्होंने अपना कलम चलाया। आँख मूदकर मौलवी रहमान अली ने लेखनी का जौहर नहीं दिखाया। तमहीद (शीर्षक) के अन्तर्गत उन्होंने लिखा है– "चन्द वंशावली राजगान बघेलखण्ड के जो मैंने फराहम (एकत्रित) की उनमें कवीस्वरो (कविगणों) के सायराना ख्यालात (काव्यात्मक विचारो) की वजह से बहुत अधिक एकतलाफ (मतभेद) पाया गया। मगर वो वंशावली 1917 सम्वत् (1860 ई.) में अजवेश राम महापात्र (द्वारा सम्पादित) मुरातवह कप्तान आसर्वन साहब बहादुर पोलिटिकल ऐजेन्ट रीवा को दी गयी थी। लायक इतमिनान (सन्तोष प्रद) पायी गयी उस वंशवली के नाम राजगान पर अक्सर पुस्तनामों का इतफाक (सफमत) था। इसलिए वहीं वंशावली इस किताब की तारीफ में बातौर अस्ल करार दी गयी, मगर पैदायिश (जन्म) और मसनद सीनी राजगान (राजो के सिंहासन रूढ़ होने के सम्वत्) उसमें भी खाली अजमूवालगा (अतिश्योक्ति) नहीं है। ये मूवालगा सायद बानजर इजहार कदामत (प्राचीनता प्रकट) करने की दृष्टि से किया गया है। इसमें वीरभानु के जमाने के हाल बहुत सही पाये जाते है।

उपयुक्त पंक्तियों के एक–एक शब्द से ज्ञात होता है कि इतिहासकार अपने कार्य में कितना सचेत था, अतिश्योक्तियाँ का कोई स्थान उसकी दृष्टि में नहीं था। जो कवियों ने रास्ता अपनाया था, उसकों मौलवी रहमान अली भी समर्थन कर सकते थे क्योंकि वे उर्दू, फारसी के स्वयं कवि थे, और काव्य शास्त्र में अतिश्योक्ति अलंकार से कौन नहीं परिचित किन्तु एक इतिहासकार के लिए ये विष का प्याला था। इतिहास में अतिश्योक्ति का क्या स्थान मौलवी साहब ने एक सच्चे इतिहास लेखक का कर्त्तव्य पालन करते हुये, उन कवियों की बातों में नहीं पड़े और वीरभानु जिसका फारसी किताबों में वर्णन आया है। उसे पढ़कर समझकर कवियों की उन बातों को प्रमाणित माना है, जिसकी तस्तीफ (प्रमाणीकरण) ऐतिहासिक ग्रन्थों से हो गया है।

इतिहासकार कहीं–कहीं निराधार नहीं किसी न किसी आधार को लेकर ही अनुमान करता है। निराधार केवल कल्पना से नहीं नतीजा को शीर्षक के अन्तर्गत मौलवी जी ने परिणाम निकाला है कि–

"इन वाकयात (घटनाओं) से यकीन हो सकता है कि सोलंकियों का शाख बघेल इन्हीं हमलों से किसी हमला में अपनी कदीम राजधानी (प्राचीन राजधानी) मुल्क गुजरात से अलैदा (अलग) होकर आये। जहाँ पर बालन्द, गोड़, बैगैरा, हुक्मरानी (शासन करते थे) और उनको फतह करके आबाद हुये।"

कहने का तात्पर्य यह है कि मौलवी जी का विचार थाा कि इस देश और दिशा में आने का कारण हमला था। किन्तु व्याघ्रदेव वलद् वीरध्वज की शीर्षक के अन्तर्गत लिखते है कि बाद वफात् (मृत्यु) अपने वालिद के सम्वत् 631 में माधवदी 12 को व्याघ्रदेव अनहिलवाड़ा पट्टन स्थित मुल्फ गुजरात में मसनद रसीने रियासत हुयी (राज्य में सिंहासना रूढ़ हुये) फिर कुछ दिनों बाद

रियासत अपने छोटे भाई सुखदेव को सुपुर्द करके खुदा बदौलत मैं अपनी रानी सिन्दूरमती व फौज के वनियत तीर्थ पूरब देश को आये काशी, गया, प्रयाग, की जियारत (दर्शन) करके चित्रकूट में वारिद हुये।

पहले स्थान में बघेल शाख का आना हमला होने के कारण बताया गया है, जबकि बाद में मौलवी जी आगमन का कारण तीर्थ यात्रा बता रहे हैं। लेकिन कहा हमले से भागना और कहा पवित्र यात्रा एवं दर्शन कार्य के लिए आना इस दोनों कथनों में काफी अन्तर है, इस खुले विरोधाभाष के कारण मौलवी जी की लेखनी सत्यमार्ग पर चलने से वंचित रह गयी, और सत्य का उद्घाटन ठीक–ठीक नहीं हुआ। दोनों कारण में कोई तुक नहीं है। बघेलखण्ड के प्रथम इतिहासकार खान बहादुर मौलवी रहमान अली ने जन श्रुतियों एवं बघेल परम्पराओं से अवगत जानकारों से सूचनाएँ एकत्रित करके व्याघ्रदेव को बघेलो का प्रथम नरेश बघेलखण्ड में मान लिया था, किन्तु ये विचार और कथन अकाट न रहा सका और आने वाले इतिहासकारों ने इससे अपनी असहमति जतायी इस प्रकार से दो गुट इतिहासकारों के हमारे समक्ष है– "एक तो व्याघ्रदेव को मूल पुरूष मानने वालो की जिसमें–जीतन सिंह, रघुवर प्रसाद, भानु सिंह, यादवेन्द्र सिंह, रामप्यारे अग्निहोत्री। दूसरे व्याघ्रदेव को मूल पुरूष न मानने वाले की जिसमें है– डॉ. राधेशरण, हीरानन्द शास्त्री, माधव उरव्य, प्रो. अख्तर हुसैन निजामी है।

उपयुक्त अभिलेख लिखने का तात्पर्य ये दिखाना है कि इतिहास में सक्ष्य का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सन्तोष प्रद साक्ष्य के अभाव पर इतिहासकारों ने व्याघ्रदेव को ऐतिहासिक पुरूष नहीं माना किन्तु परम्परावादी लोगों ने अपनी–अपनी ऐतिहासिक पुस्तकों में स्थान दिया है। अभी तक इतिहास लेखकों का मत एक नहीं हुआ क्या होगा आने वाला समय ही निर्णायक हुआ आगे क्या होगा आने वाला समय ही निर्णायक होगा।

सन्दर्भ

[i] हालाद–ए–खानदानी, लेखक–काजी अय्याज अली

[ii] तज किराये उल्माये हिन्द, मौलवी रहमान अली

[iii] तरजुमा तजकिराये हिन्द, मो. रहमान अली. पृ. 142, प्रकाशन–पाकिस्तान हिस्टॉरिकल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित

[iv] तरजुमा तजकिराये हिन्द, मो. रहमान अली. पृ. 219, प्रकाशन–पाकिस्तान हिस्टॉरिकल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित